Pratham
Every Child in School and Learning Well

Annual Status of Education Report
Age 14-18 असर ASER 2017 RURAL
Facilitated by PRATHAM

बारहवीं ऐन्युअल स्टेटस ऑफ़ एज्युकेशन रिपोर्ट (असर 2017 : बियॉन्ड बेसिक्स) का लोकार्पण नई दिल्ली में, 16 जनवरी 2018 को किया गया

असर 2017 : 'बियॉन्ड बेसिक्स' का आज नई दिल्ली में लोकार्पण हुआ। यह बारहवीं वार्षिक रिपोर्ट है। 2005 से प्रत्येक वर्ष, ऐन्युअल स्टेटस ऑफ़ एज्युकेशन रिपोर्ट (असर) बच्चों के स्कूल में नामांकन और बुनियादी पढ़ने और गणित करने की क्षमता के बारे में बता रहा है। प्रत्येक वर्ष असर ने इस बात को उजागर किया है कि भारत के लगभग सभी बच्चे स्कूल में नामांकित हैं परंतु बहुत से बच्चे स्कूल तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक बुनियादी कौशल, जैसे कि पढ़ना एवं सरल गणित करना, प्राप्त नहीं कर रहे हैं। वर्ष 2006 से असर 5 से 16 आयु वर्ग के बच्चों पर केंद्रित है।
वर्ष 2017 में, असर 14 से 18 वर्ष के युवाओं पर केन्द्रित है, जिन्होंने प्रारम्भिक शिक्षण की आयु को पार कर लिया है।
प्रारम्भिक शिक्षण स्तर पर लगभग सर्वव्यापक नामांकन और सभी बच्चों को अगली कक्षा में स्वतः प्रवेश मिल जाने का प्रभाव यह रहा है कि अधिक से अधिक बच्चे प्रारम्भिक शिक्षण पूरा कर रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट इन्फोर्मेशन सिस्टम फॉर एज्युकेशन (DISE) के औपचारिक आंकड़ों के अनुसार, 2004-2005 से 2014-2015 के दशक में कक्षा VIII में नामांकित बच्चों की संख्या 1.1 करोड़ से दोगुनी होकर लगभग 2.2 करोड़ हो गई है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, वर्तमान में प्रत्येक दस भारतीयों में से एक 14 से 18 आयु वर्ग में है। अर्थात इस आयु वर्ग के युवाओं की कुल संख्या 10 करोड़ है। इन सभी पहलुओं के कारण हमें लगा कि 14-18 आयु वर्ग के युवाओं पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है।

असर 2017 सर्वेक्षण में पढ़ने तथा गणित करने की बुनियादी क्षमताओं से आगे, अर्थात 'बियॉन्ड बेसिक्स' देखने की एक पहल है। इसमें चार डोमेन शामिल हैं – गतिविधि, क्षमता, जागरूकता और आकांक्षाएँ। पिछले वर्षों के समान, असर 2017 भी घरों में किया गया सैंपल आधारित सर्वेक्षण है जिसमें आसानी से पूछे एवं समझे जाने वाले प्रश्न सम्मिलित हैं। पहले की तरह ही, असर 2017 भी स्थानीय सहभागी संस्थाओं के सहयोग से कार्यान्वित किया गया है। असर सर्वेक्षण पहली बार इस आयु वर्ग पर केन्द्रित है, इसलिए यह सर्वेक्षण हमारे देश के लगभग सभी राज्यों के एक या दो जिलों में किया गया है। असर 2017, 24 राज्यों के कुल 28 ज़िलों में कार्यान्वित किया गया है। 35 सहभागी संस्थानों के लगभग 2,000 स्वयंसेवकों ने 1,641 गाँवों के 25,000 से अधिक घरों में जाकर, 14-18 आयु वर्ग के 30,000 से अधिक युवाओं का सर्वेक्षण किया है।

असर 2017 : प्रमुख निष्कर्ष

गतिविधि

14-18 आयु वर्ग के 86% युवा औपचारिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत स्कूल या कॉलेज में नामांकित हैं।

- इस आयु वर्ग के आधे से ज़्यादा युवा (54%) कक्षा X या उससे नीचे की कक्षाओं में नामांकित हैं। बाक़ी 25% कक्षा XI या XII में नामांकित हैं और 6% अंडरग्रेजुएट या अन्य डिग्री कोर्स में

नामांकित हैं। केवल 14% युवा ही वर्तमान में किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा में नामांकित नहीं हैं।

- औपचारिक शिक्षा प्रणाली में लड़के और लड़कियों के नामांकन में अंतर आयु के साथ बढ़ता जाता है। 14 वर्ष की आयु के लड़के और लड़कियों के नामांकन के आंकड़ों में ज़्यादा अंतर नहीं है; परंतु 18 वर्ष की आयु में 28% लड़कों की तुलना में 32% लड़कियाँ नामांकित नहीं हैं।

- आयु के साथ, ऐसे युवाओं का अनुपात बढ़ता जाता है जो स्कूल या कॉलेज में नामांकित नहीं हैं। 14 वर्ष की आयु में केवल 5% युवा नामांकित नहीं हैं परंतु 18 वर्ष की आयु तक यह आंकड़ा 30% हो जाता है।[1]

- कुल मिलाकर, लगभग 5% युवा किसी भी प्रकार का वोकेशनल कोर्स कर रहे हैं। इसमें स्कूल या कॉलेज में नामांकित युवा एवं युवा जो वर्तमान में कहीं नामांकित नहीं हैं, दोनों शामिल हैं।

- जो युवा वोकेशनल कोर्स कर रहे हैं, उनमें से अधिकतर 6 महीने या उससे कम अवधि के कोर्स में नामांकित हैं। वोकेशनल कोर्स करने वालों में सबसे अधिक (34%) उन कोर्स में नामांकित हैं जो 3 महीने या उससे कम अवधि के हैं, और 25% 4 से 6 महीनों की अवधि वाले कोर्स में नामांकित हैं।

- 14-18 आयु वर्ग के युवाओं का एक बड़ा हिस्सा (42%) काम कर रहा है, चाहे वे स्कूल या कॉलेज में नामांकित हों या नहीं। जो युवा काम कर रहे हैं, उनमें से 79% खेती का काम करते हैं – अधिकतर सभी अपने परिवार के खेत पर। साथ ही, तीन-चौथाई से भी ज़्यादा युवा, प्रतिदिन घर के काम भी करते हैं – 77% लड़के और 89% लड़कियाँ।

क्षमता

पिछले 12 वर्षों से, असर के आंकड़े निरंतर इस बात की ओर इशारा करते आए हैं कि प्रारम्भिक स्कूलों में बहुत से बच्चों को पढ़ने और सरल गणित करने जैसी बुनियादी क्षमताएँ प्राप्त करने के लिए तुरंत सहयोग की आवश्यकता है। इस वर्ष 14-18 आयु वर्ग के युवाओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, इसलिए युवाओं की बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उनकी “बियॉन्ड बेसिक्स”, अर्थात बुनियादी क्षमताओं से आगे के कार्यों को करने की क्षमता को भी समझना आवश्यक है।

---

[1] भारत की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, 2011 में, 18 वर्ष की आयु के 56% युवा किसी भी शैक्षणिक संस्थान में नामांकित नहीं थे। जनगणना 2001 में यह आंकड़ा 74% था।

क्षमता : बुनियादी पढ़ना, गणित करना एवं अंग्रेज़ी

14-18 आयु वर्ग के युवाओं की बुनियादी क्षमताओं की वर्तमान स्थिति पर ध्यान दें :

- इस आयु वर्ग के लगभग 25% युवा अभी भी अपनी भाषा में एक सरल पाठ को धाराप्रवाह रूप से नहीं पढ़ सकते।
- आधे से ज़्यादा युवा भाग का सवाल (तीन अंकों वाली संख्या का एक अंक से) करने में कठिनाई का सामना करते हैं। केवल 43% ही इस प्रकार के सवालों को सही करने में सक्षम हैं। भाग करने की क्षमता – जिसकी जाँच असर में की जाती है - को बुनियादी गणितीय संक्रियाएँ करने की क्षमता के रूप में समझा जा सकता है।
- सर्वेक्षण के लिए चयनित आयु 14 के सभी युवाओं में से 53% अंग्रेज़ी वाक्य पढ़ सकते हैं। आयु 18 के युवाओं के लिए यह अनुपात लगभग 60% है। उन सभी युवाओं में से जो अंग्रेज़ी वाक्य पढ़ सकते हैं, 79% युवा उन वाक्यों का अर्थ बता सकते हैं।
- इस आयु वर्ग के युवाओं में से, जिन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के 8 वर्ष पूरे कर लिए हैं, एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जिनमें अभी भी बुनियादी क्षमताओं - जैसे पढ़ना एवं सरल गणित करना की कमी है।

हांलाकि, क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेज़ी में पढ़ने की क्षमता में आयु के साथ सुधार नज़र आता है (14 वर्ष के युवाओं की तुलना में 18 वर्ष के अधिक युवा पढ़ सकते हैं) किन्तु गणित में ऐसा नहीं देखा गया है। बुनियादी गणित करने की क्षमता में असमर्थ 14 वर्ष के युवाओं का प्रतिशत, 18 वर्ष के युवाओं के बराबर ही है। प्रारम्भिक स्तर पर सीखने के आभाव का असर आगे भी नज़र आता है, जब युवा किशोरावस्था से वयस्कता में प्रवेश करते हैं।

क्षमता : दैनिक जीवन में बुनियादी पढ़ने और गणित करने की क्षमताओं का इस्तेमाल करना

सभी से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसे कई दैनिक कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें बुनियादी पढ़ने और गणित करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। इस आयु वर्ग के कई युवा ऐसे हैं जो 8 वर्षों की प्रारम्भिक शिक्षण पूरा करने वाले अपने परिवार के पहले सदस्य हैं।[2] अतः सामान्य गणनाएँ करना एवं सही निर्णय लेना उनके लिए ही नहीं किन्तु इनके पूरे परिवार के लिए महत्वपूर्ण है |

असर 2017 ने, 14-18 आयु वर्ग के युवाओं की कुछ ऐसे कार्य करने की क्षमताओं को समझने का प्रयास किया है। दैनिक कार्यों में हमने कुछ सरल गतिविधियों का चयन किया जैसे पैसे गिनना, वज़न जोड़ना और समय बताना :

[2] 14-18 आयु वर्ग के लगभग 44% युवा ऐसे हैं जिनकी माता कभी स्कूल नहीं गई हैं; 25% ऐसे हैं जिनके पिता कभी स्कूल नहीं गए हैं और 20% ऐसे युवा हैं जिनके माता एवं पिता दोनों ही कभी स्कूल नहीं गए हैं।

- यह कुल कितने रुपये हैं? सर्वेक्षित युवाओं में से 76% रुपयों की सही गिनती कर पाए। जो युवा बुनियादी गणित कर सकते हैं,[3] उनमें यह प्रतिशत लगभग 90% था। (इस कार्य में सरल जोड़ करना आना चाहिए)
- 56% युवा किलोग्राम में सही वजन जोड़कर बता सके। जो युवा बुनियादी गणित कर सकते हैं, उनमें यह प्रतिशत 76% था। (इस कार्य में जोड़ करना एवं ग्राम और किलोग्राम में परिवर्तन करना शामिल है)
- समय बताना एक सामान्य दैनिक कार्य है। 83% युवाओं ने सरल प्रश्न (केवल घंटे बताना) का सही उत्तर दिया। किन्तु थोड़े से कठिन प्रश्न (घंटे और मिनट दोनों बताना) का सही उत्तर केवल 60% युवा ही दे सके।

क्या युवा ऐसी सामान्य गणनाएँ कर सकते हैं जिनकी आम-तौर पर ज़रुरत पड़ती है? असर 2017 के लिए हमने कुछ ऐसी गतिविधियों का चयन किया - जैसे रूलर की सहायता से लम्बाई मापना, समय की गणना करना, एकाकिक विधि का इस्तेमाल करना (उदाहरण के लिए, यह निर्णय लेना कि पानी को स्वच्छ करने के लिए क्लोरीन की कितनी गोलियों की आवश्यकता है)।

- 86% युवाओं ने दी गई वस्तु की लम्बाई सही नापी जब वह वस्तु रूलर पर '0' के निशान पर रखी थी। मगर जब वह वस्तु रूलर पर किसी और जगह रखी थी तो केवल 40% ही सही जवाब दे पाए।[4]
- यह लड़की कितने घंटों के लिए सोती है? सर्वेक्षित युवाओं में से केवल 40% ने ही सही उत्तर दिया। जिन युवाओं को भाग करना आता था, उनमें से 55% ने सही उत्तर दिया।
- इस बड़े घड़े में पानी को स्वच्छ करने के लिए कितनी गोलियों की ज़रुरत है? केवल 50% युवाओं ने इसका सही उत्तर दिया। जिन युवाओं को भाग करना आता था, उनमें यह संख्या 70% थी।

दैनिक जीवन के कई कार्यों के लिए लिखित निर्देश पढ़कर समझना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए, पानी की कमी को रोकने के लिए खासकर दस्त लगने की स्थिति में जीवन रक्षक घोल (ओरल रीहाईड्रेशन सोल्यूशन) के उपाय का सुझाव दिया जाता है। ओ.आर.एस. के पैकेट ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपलब्ध हैं।

इन पैकेट पर सरल और स्पष्ट निर्देश दिए जाते हैं। यह जानने के लिए कि युवा सरल निर्देश पढ़ और समझ सकते हैं, हमने उनसे पैकेट पर दिए निर्देशों पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे। उदाहरण के लिए : 2 लीटर पानी में ओ.आर.एस. के कितने पैकेट घोलना चाहिए? इस घोल का उपयोग कितने घंटों के

---

[3] बुनियादी गणित की क्षमता से हमारा अर्थ है 100 तक संख्या जानना एवं 4 बुनियादी गणितीय संक्रियाएँ कर सकना।

[4] कई वर्षों से एज्युकेशनल ईनीशिएटिव्स ने अपने मूल्यांकन में इस तरह के प्रश्न को शामिल किया है।

अन्दर कर लेना चाहिए? 24 घंटों में, एक वयस्क को कितनी बार ओ.आर.एस. का घोल पिलाया जा सकता है? पैकेट को कब तक इस्तेमाल किया जा सकता है।

- हमारे सैंपल में, 75% युवा कक्षा 2 के स्तर का पाठ धाराप्रवाह पढ़ सकते हैं। मगर आधे से कुछ अधिक (53.5%) ही ओ.आर.एस. के पैकेट पर दिए गए निर्देश पढ़कर उस पर आधारित 4 में से कम से कम 3 प्रश्नों का सही उत्तर दे सके।
- उनमें से जिन्होंने 8 वर्षों की प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की है या जो वर्तमान में स्कूल या कॉलेज में नामांकित हैं, 58% निर्देश पढ़कर समझ सकते हैं। मगर जो वर्तमान में नामांकित नहीं हैं, उनमें से केवल 22% युवा ही पढ़कर समझने में समर्थ हैं।

आम-तौर पर की जाने वाली वित्तीय गणनाएँ कौनसी हैं? असर 2017 ने इन चार उदाहरण को शामिल किया :

- बजट से सम्बंधित निर्णय लेना : आपके पास 50 रुपये हैं और आप एक मूल्य सूची देख रहे हैं जिसमें जलपान की वस्तुओं के मूल्य दिए गए हैं। कौन सी तीन ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें 50 रुपये पूरे खर्च कर आप खरीद सकते हैं?
- ख़रीदारी से सम्बंधित निर्णय लेना : दूसरे कार्य में, आपको पाँच किताबों का एक सेट खरीदना है। दो दुकानों में भिन्न मूल्य में किताबें मिल रही हैं। अगर आप कम से कम रुपये खर्च करना चाहते हैं तो कौनसी दुकान से किताबें खरीदेंगे? आप कितने पैसे खर्च करेंगे?

ऊपर दिए गए दोनों कार्यों को, 14-18 आयुवर्ग के दो-तिहाई से भी कम युवा (64%) सही कर पाए। यह संख्या, कम से कम घटाव करने में सक्षम युवाओं की संख्या से मेल खाती है ।

- छूट की गणना करना : तीसरे कार्य में एक टी-शर्ट का चित्र दिया गया था जिस पर 10% की छूट है। यह पता करना था कि छूट के बाद टी-शर्ट खरीदने के लिए कितने रुपये खर्च करने होंगे। 38% युवा इस अभ्यास को सही करने में सफल थे।
- भुगतान की गणना करना : चौथा कार्य तीन बैंकों की ब्याज की दरों की तुलना कर यह तय करना था कि किस बैंक से लोन लिया जाए और एक साल बाद कितनी राशी का भुगतान करना होगा। 71% युवाओं ने सही बैंक का चयन किया लेकिन केवल 22% भुगतान की सही राशि का हिसाब करने में सक्षम थे।

भूगोल और सामान्य ज्ञान की कितनी जानकारी है? हर सर्वेक्षित युवा को भारत का नक़्शा दिखाया गया। फिर उनसे कई प्रश्न पूछे गए :

- “यह किस देश का नक्शा है?” 86% युवाओं ने उत्तर में भारत कहा।
- “देश की राजधानी का क्या नाम है?” 64% ने सही उत्तर दिया।

- "आप किस राज्य में रहते हैं?" 79% ने सही उत्तर दिया।
- "क्या आप नक़्शे पर अपने राज्य को दिखा सकते हैं?" 42% ने सही उत्तर दिया।

कुल मिलाकर, यह बात सामने आती है कि बुनियादी क्षमताएँ जैसे पढ़ना और गणित करना दैनिक कार्य और सामान्य गणनाएँ करने में सहयोगी हैं। हांलाकि, सभी ऐसे युवा जो पढ़ना एवं बुनियादी गणित करना जानते हैं, इन दैनिक कार्यों को सही तरीके से पूरा नहीं कर पाते हैं। उसी तरह 8 वर्षों की प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करना लाभदायक है, किन्तु वे सभी युवा जिन्होंने ऐसा किया है, इन सब कार्यों को सही करने में सक्षम नहीं हैं। लगभग सभी कार्यों में लड़कियों का प्रदर्शन लड़कों की तुलना में ख़राब था। यह आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि बहुत से युवा जिन्होंने 8 वर्षों की शिक्षा पूरी की है उन्हें भी अपने पढ़ने एवं बुनियादी गणित करने की क्षमता को दैनिक कार्यों में इस्तेमाल करने में कठिनाई होती है।

जागरूकता और आकांक्षाएँ

सर्वेक्षण के लिए चयनित प्रत्येक युवा से उनकी मीडिया, वित्तीय संस्थानों और डिजिटल उपकरणों तक पहुँच को समझने के लिए कई प्रश्न पूछे गए थे।

जैसा कि अनुमानित था, 14-18 आयु वर्ग के युवाओं में मोबाइल फ़ोन का उपयोग व्यापक है। 73% युवाओं ने पिछले एक सप्ताह में मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल किया था।

- हालाँकि, लड़के और लड़कियों के मोबाइल फ़ोन के उपयोग में बहुत अंतर नज़र आता है। जबकि केवल 12% लड़कों ने मोबाइल फ़ोन का उपयोग कभी नहीं किया, लड़कियों में यह अनुपात काफ़ी अधिक है (22%)।
- आयु के साथ मोबाइल फ़ोन का उपयोग बढ़ता है। आयु 14 के 64% युवाओं ने पिछले एक सप्ताह में मोबाइल फ़ोन का उपयोग किया है। आयु 18 के युवाओं के लिए यह अनुपात 82% है।

परंतु इन युवाओं का कम्प्यूटर और इन्टरनेट का उपयोग बहुत कम था। पिछले एक सप्ताह में 28% ने इन्टरनेट और 26% ने कम्प्यूटर का उपयोग किया था। जबकि 59% ने कम्प्यूटर और 64% ने इन्टरनेट का उपयोग कभी नहीं किया है।

- वर्तमान में जो युवा नामांकित हैं उनकी कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट तक पहुँच बेहतर है उन युवाओं की तुलना में जो वर्तमान में नामांकित नहीं हैं। हालाँकि, मोबाइल फ़ोन का उपयोग सभी युवाओं में ज़्यादा है चाहे वे नामांकित हो या नहीं।
- लड़कों की तुलना में लड़कियों की कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट तक पहुँच बहुत कम है। जबकि 49% लड़कों ने इन्टरनेट का उपयोग कभी नहीं किया, लड़कियों में यह अनुपात 76% है।

जैसा कि अनुमानित था, लगभग सभी युवाओं ने (85%) पिछले सप्ताह में टेलिविज़न देखा था। पिछले सात दिनों में, 58% ने अख़बार पढ़ा था और आधे से कुछ कम (46%) ने रेडियो सुना था। डिजिटल उपकरणों के इस्तेमाल की तुलना में, पारंपरिक मीडिया के उपयोग में लड़कों और लड़कियों के बीच अंतर कम था।

वित्तीय प्रक्रियाओं एवं संस्थानों में सहभागिता के सन्दर्भ में, लगभग 75% युवाओं के पास स्वयं का बैंक खाता है। दिलचस्प बात यह है कि इस आयु वर्ग की उन लड़कियों का प्रतिशत जिनके पास स्वयं का बैंक खाता है, लड़कों की तुलना में थोड़ा अधिक है। 51% युवाओं ने बैंक में पैसे जमा किए या निकाले हैं। 16% युवाओं ने ATM या डेबिट कार्ड का उपयोग किया है, परंतु केवल 5% ने किसी पेमेंट ऐप या नेट/मोबाइल बैंकिंग द्वारा कोइ लेन-देन किया है।

असर 2017 ने युवाओं से उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं के बारे में भी पूछा। 14-18 आयु वर्ग के लगभग 60% युवा कक्षा XII से आगे पढ़ना चाहते हैं। जो युवा असर की जाँच में कक्षा II का पाठ धाराप्रवाह नहीं पढ़ सके, उनके लिए यह अनुपात लगभग आधा (35%) ही था।

लड़के और लड़कियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। ज़्यादातर लड़के सेना/पुलिस में भर्ती या इंजिनियर बनने की आकांक्षा रखते हैं। इसकी तुलना में लड़कियों ने शिक्षक या नर्स बनने की ओर प्राथमिकता दिखाई। ऐसे युवाओं में से, जो वर्तमान में किसी शैक्षणिक संस्थान में नामांकित नहीं हैं, लगभग एक-तिहाई युवा किसी विशेष व्यवसाय की आकांक्षा नहीं रखते। अंत में, 40% युवाओं के लिए उस व्यवसाय का कोई भी प्रेरणा स्त्रोत नहीं है, जिसे करने की वे आंकांक्षा रखते हैं।

अंतिम निष्कर्ष

यदि हम यह सुनिश्चित नहीं करेंगे कि इन युवाओं को वह ज्ञान, कौशल और अवसर प्राप्त हों जिनकी उन्हें स्वयं को एवं अपने परिवार और समाज को आगे ले जाने के लिए ज़रूरत है, तो भारत अपने प्रतीक्षित 'डेमोग्राफ़िक डिविडेंड' का लाभ नहीं उठा सकेगा। हाल ही के कुछ वर्षों में इस आयु वर्ग के युवाओं से हमारी बात-चीत से यह पता चलता है कि एक राष्ट्र के रूप में हमें इस आयु वर्ग पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। असर 2017 इसी स्थिति को प्रकाशित करने का एक प्रयास है। हम आशा करते हैं कि इस पहल से, आगे का रास्ता क्या होना चाहिए, इस विषय पर देश-व्यापक विचार-विमर्श की शुरुआत हो।

अधिक जानकारी के लिए, सम्पर्क करें:

रणजीत भट्टाचार्य: 99711-37677 (ई-मेल: ranajit59@gmail.com)